सम्पादकीय

'दर्शन प्रज्ञा' का प्रथम अंक प्राध्यापकों की शोध प्रवृत्ति को आकार देने का उपक्रम है। न केवल ज्ञानमय कोष की वृद्धि करने हेतु वरन् अपने ज्ञान को अद्यतन बढ़ाने की दिशा में भी प्राध्यापकों/शोधार्थियों का यह प्रयास उच्च शिक्षा के शैक्षणिक जगत में एक सार्थक पहल है। दार्शनिक क्रिया समाज में व्याप्त सांस्कृतिक दशा को प्रतिबिम्बित करता है। ईशावस्य उपनिषद् के मंत्र को ध्यान में रखते हुए दार्शनिक विमर्श निर्लिप्त भाव से किया जाना श्रेयस्कर है। इस सम्पादकीय को लिखते समय मेरे मानस पटल पर ऐसा ही भाव चित्रित हो रहा है। ईशावस्य उपनिषद् के मंत्र 'न कर्म लिप्यते नरेः' से प्रेरणा लेकर अपना कार्य करना चाहिए। भारतीय ज्ञान परम्परा आंशिक सत्य के बजाय पूर्ण सत्य की बात करता है। दार्शनिक क्रिया अंश की जगह समग्र पर आधारित है। प्रस्तुत प्रति में अध्येताओं के अनेक महत्वपूर्ण आलेख हैं। प्रो0 जितेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा रचित 'आचार्य विनोवा भावे के विचार में भक्तियोग का केन्द्रीय रहस्य–एक विवेचन' एवं युवा पीढ़ी में ध्यान की कमी और योग' एक श्रेष्ठकोटि का दार्शनिक एवं साहित्यिक आलेख माना जा सकता है। डॉ0 सुचेता शुक्ला ने 'पुरुषार्थ का तात्त्विक एवं सांस्कृतिक विवेचन में' पुरुषार्थ का प्रयोजन मानव क्रियाओं को एक आदर्श जीवन दर्शन देता है। ऐसा मूल्यवान निष्कर्ष निगमित किया है। प्रो0 रंजय प्रताप सिंह ने अपने लेख 'शांकर वेदान्त' में सन्यास की महत्ता पर प्रकाश डाला है। डॉ0 राजीव द्विवेदी ने 'शांकर वेदान्त में पूर्णता की खोज' पर विशु दार्शनिक लेख लिखा है। प्रो0 शिशिर कुमार मंडल ने 'कबीर के दर्शन में राम का स्वरूप' का वर्णन करते हुकहते हैं कि साधना में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान होता है उन्होंने तो नाम स्मरण, ब्रह्म में चित्त को स्थापित करने, अजपाजप तथा सहज शून्य में समाधि को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानते हैं। प्रस्तुत शोध पत्रिका में दिये गए सभी लेख/आलेख विशिष्ट दृष्टिकोण से लिखे गए हैं अतः अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

प्रकाशनार्थ प्रस्तुत शोध पत्रिका ''दर्शन शोध प्रज्ञा'' के सुमधुर बेला में मैं प्रथमतः परम पूज्य गुरुदेव माननीय जीवनपर्यन्त कुलाधिपति स्वामी रामभद्राचार्य के कमलवत चरणों में श्रद्धावनत हूँ। जिनका स्नेह व आशीर्वाद प्रतिपल प्राप्त होता रहता है। परमादरणीय संरक्षक प्रो0 शिशिर कुमार पाण्डेय, कुलपति जी का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनका मार्गदर्शन और अमूल्य सुझाव एवं आशीर्वाद मुझे इस पुनीत कार्य को गति प्रदान करने में निरन्तर सहायक रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्रिका की पूर्णता में हमें जिन मूर्धन्य गुरुजनों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है उनमें सर्वप्रथम प्रो0 जटाशंकर, प्रो0 रामपूजन पाण्डेय, प्रो0 एच0एस0 उपाध्याय, प्रो0 ए0बी0 शर्मा, प्रो0 प्रियदत्त शुक्ला, प्रो0 विजयकान्त दुबे, प्रो0 जितेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो0 ऋषिकान्त पाण्डेय, प्रो0 रंजय प्रताप सिंह, प्रो0 ज्योति स्वरूप दुबे, प्रो0 राजीव द्विवेदी, प्रो0 प्रबुद्ध मिश्र, डॉ0 राजेश कुमार तिवारी, डॉ0 अमरीष राय आदि को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ साथ ही मा0 कुलाधिपति जी के निजी सचिव मेरे बड़े भाई श्री रमापति मिश्र, कुलसचिव श्री मधुरेन्द्र कुमार पर्वत जी का मुझे सदैव विभागीय सहयोग व मार्गदर्शन एवं स्नेह प्राप्त होता रहा है। मैं उनके इस सद्भाव के प्रति श्रद्धावनत हूँ। शोध पत्रिका के प्रकाशन विभाग एवं टंकणकर्ता श्री रामेन्द्र सचान एवं अन्य सहायकों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इस कार्य में मेरी सहधर्मिणी डॉ0 सुषमा मिश्रा ने भी समय समय पर अपनी व्यस्त दिनचर्या में समय निकालकर यथा सहयोग दिया। अन्ततः लेखक अपने पूज्य माता–पिता व सभी बड़ों के प्रति अत्यधिक कृतज्ञ है जिन्होंने सदैव अपने वात्सल्य तथा संरक्षण से मुझे इस योग्य बनाया कि मैं इस शोध पत्रिका ''दर्शन प्रज्ञा'' के प्रथम अंक का प्रकाशन कर पाया। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि दर्शन प्रज्ञा शोध पत्रिका दर्शन के शोधार्थियों एवं शुभेच्छुओं के लिए एक मील

का पत्थर साबित होगी। अन्त में मैं इस पत्रिका के सम्बन्ध में पाठकों के सुझाव आमंत्रित करते हैं जिससे इसके स्तर में निरन्तर सुधार किये जा सकें।

डॉ0 हरिकान्त मिश्र
सम्पादक दर्शन–प्रज्ञा